आरम्भ

प्रदीप सोनी

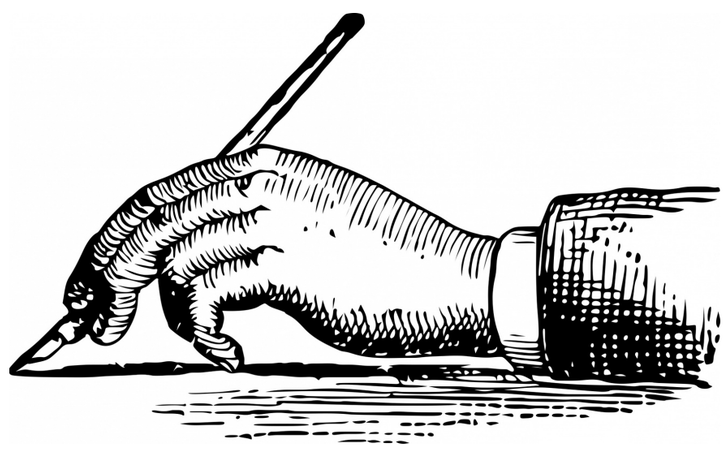

आरम्भ कविता संग्रह का यह पहला अंश महाभारत के अद्भुत पात्र दानवीर कर्ण को समर्पित

आज भी जाती ट्रेन को हाथ
हिलाकर विदा कर देता हूं
ये बचपन बचाने को कमबख्त
मैं क्या क्या नहीं करता

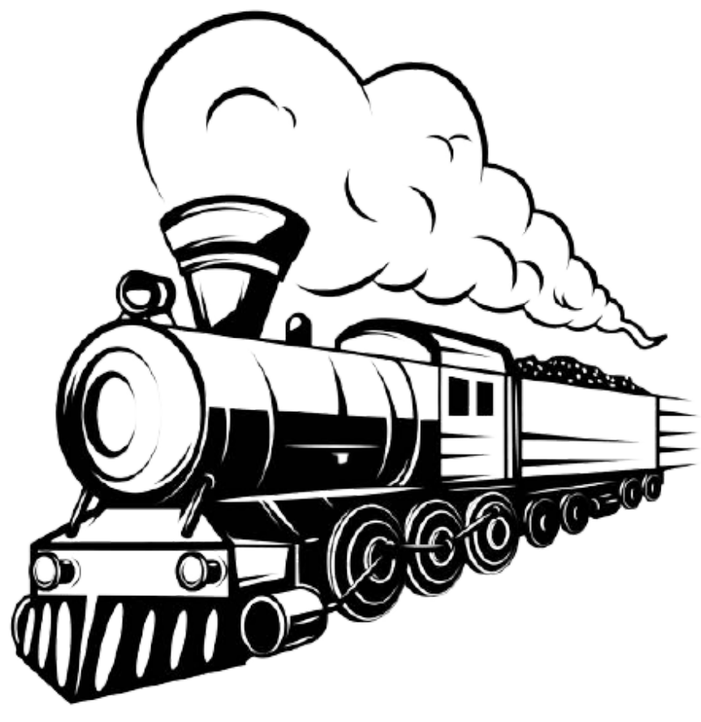

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बेशक रुसवा है वो मुझसे
पर सवाल जरूर पूछता हैं
बड़ा अजीज है दुश्मन मेरा
हाल जरूर पूछता हैं

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

यादे हो या दर्द कोई
हम दिल में सज़ा कर रखते है
बेशक से खुद टूट जाये
पर मैं को बचा कर रखते है

लेखshala

मैं गया था मंदिर वो साथ मेरे
बोला खुदा भी मुस्काकर

“अब क्या मांगने आया है“

लेख shala
Expressing the Inexpressible

इश्क के नाम पर बस इतना मिला है लाला दिल में ना सही ब्लाक लिस्ट में तो बस्ते है

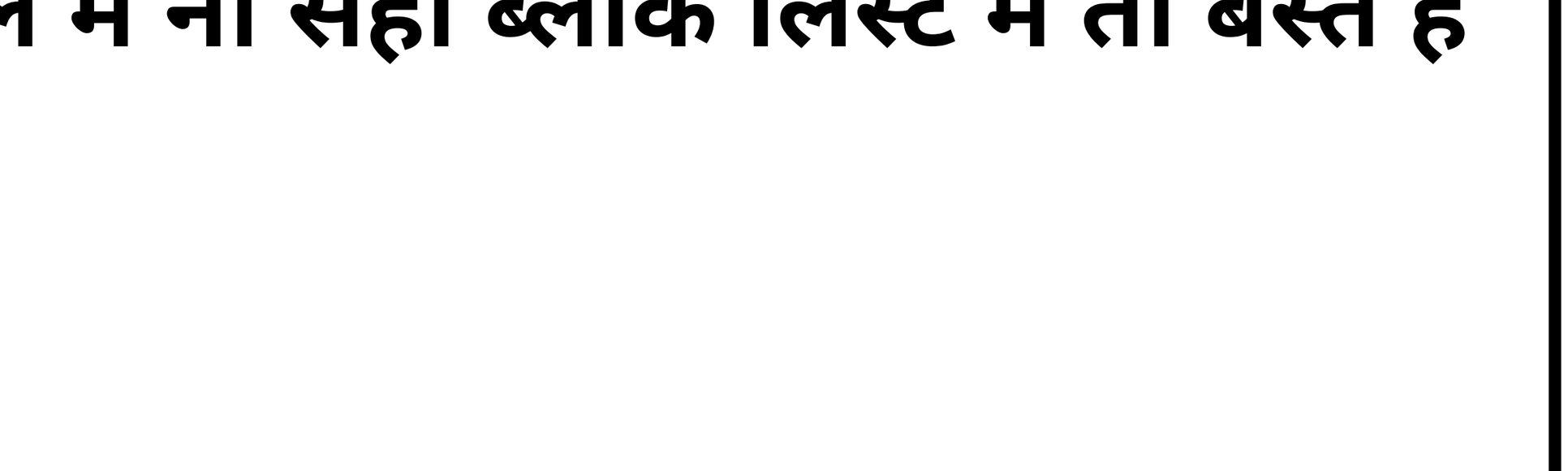

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

जाते जाते लाला मेरा ये काम कर दे
मुस्कुरा कर हाल पूछ ले और बदनाम कर दे

लेख shala

कतरे कतरे का लाला यहाँ हिसाब होता है
माँ के प्यार सा यहाँ सब बेहिसाब नहीं होता

लेख shala
Expressing the Inexpressible

ऐ दुश्मनों जरा इज्ज़त करा करो मेरी तुम्हारी दुश्मनी की भी मैं तारीफे करता हूँ

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

अरमान के जनाजे पर
हसरतें कुछ यु रोई
जिस कदर घुट घुट कर
इक तरफा प्यार रोता है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

शिकायत की आइने ने
की तू मिलने नहीं आता
मैंने भी फिर बोल दिया
अब वो भी कहा आता है

लेख shala

जब याद आती है तेरी
पर हम सो नहीं सकते
ये दिल तो पत्थर है लाला
और पत्थर रो नहीं सकते

लेख shala
Expressing the Inexpressible

सपने बेच तेरा बकाया भी चुका देंगे ऐ जिन्दगी किरायेदारो को इतना तंग ना किया कर

लेख shala
Expressing the Inexpressible

ऐ जाने वाले
जरा एहसान तो दिखा जा

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

उसकी कचहरी में कभी इश्क नहीं मिला हम गरीब थे लाला तारीखे ही लेकर आते थे

लेख shala

भुला देते है वो घर - बार - यार - त्योहारों को
ये मुल्क पर मिटने वाले भी क्या खूब होते है

अकड़ ही बिना बात होती है लाला
वरना बात पे तो बात होती है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

अपने दर्द की दुहाईया ना दे लाला
मेरा दर्द तेरे दर्द पर हँसने लगा है अब

लेख shala

इस अंदाज है गाली को
बेअब्दी ना समझ लाला
दिल के साफ़ लोगो का
लाड ही ऐसा होता है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

तू क्यों इंसा को इंसा
नहीं समझता ऐ खुदा
जरा बता तो क्या तू भी
सरकारी नौकरी करता है

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

बतिया बुझा देने से
कुछ नहीं होता साहब
सियासत तो आज भी
काफिलों में निकलती है

लेख
shala

तेरे सुख में कौन हस्ता है
तेरे दुःख में कौन रोता है
अरमानों की अर्थी का बोझा
ये दिल ही अकेला ढ़ोता है

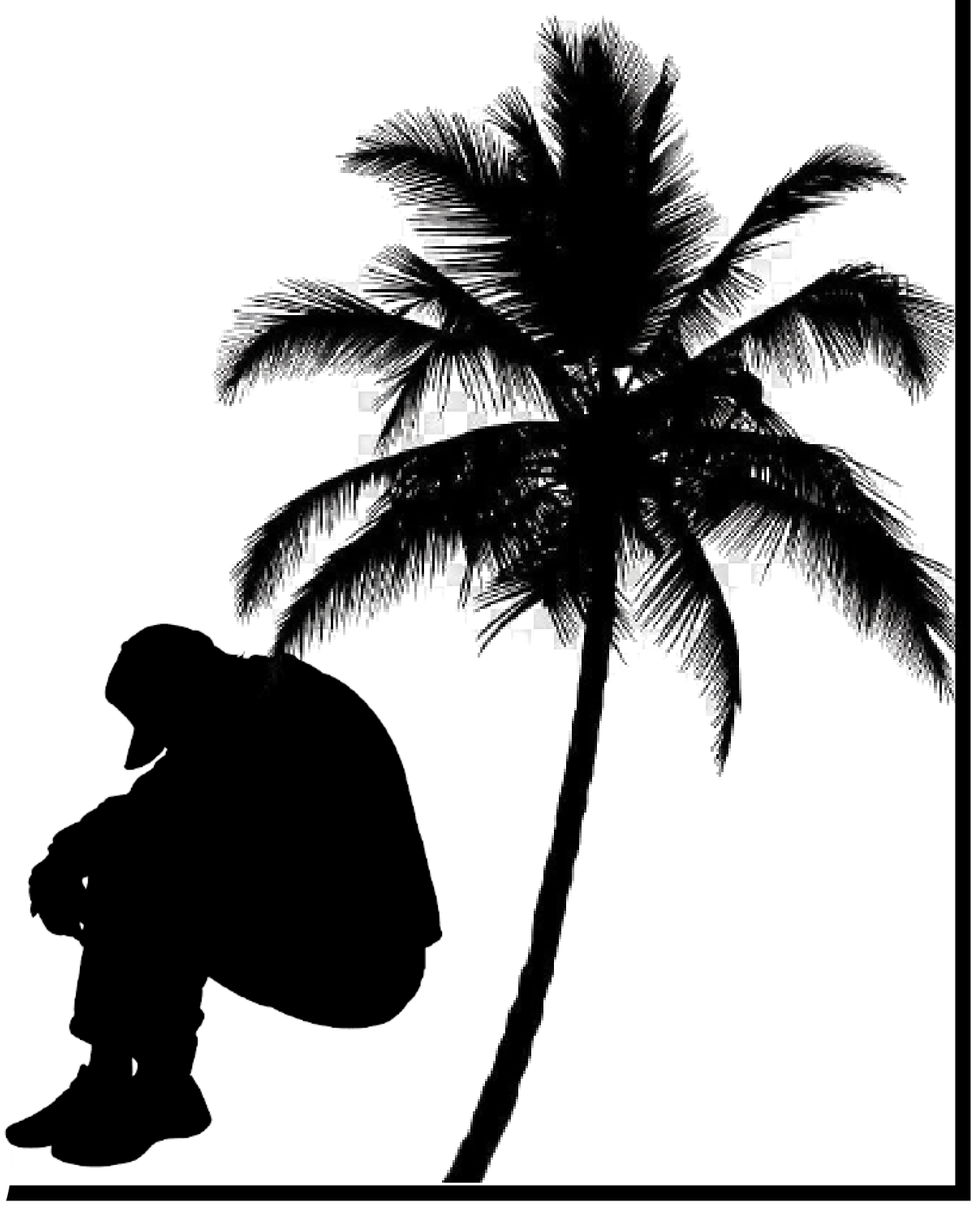

लेख shala
Expressing the Inexpressible

जाता हूँ मैं अक्सर उस खुदा से मांगने
मांगने चीजे मैं बेशुमार जाता हूँ
आंखे बंद करते ही तेरी सूरत दिखने लगती है
फिर भूल के सारी शौहरत इक तेरी खैर मांग आता हूँ

ना तुझ से कोई डरता है
ना तुझ पे कोई मरता है
मजबूरी के है सौदे सब
यहाँ सब के बिना सब सरता है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

मिलते होंगे ताजमहल
किसी को नजराने इश्क में
हमे तो इश्क ऐ वतन में
तिरंगे की शान मिलती है

लेख shala

तेरे कुचे में हम आये थे
तेरी इक झलक दीदार को
देखा हमने तुमको जी भर
लोगों ने निहत्थों पर वार को

अर्जुन छोड़ दे सारे रिश्तो को
ना तुझ को कोई पार उतारेगा
जो तूने खुद को नहीं मारा
तेरा खुद ही खुद को मारेगा

लेख shala
Expressing the Inexpressible

आरम्भ का अंत शत्रु अंत होना चाहिए
निर्दयी हो वार - वार अनंत होना चाहिए

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बन्दूको को जरा काम में लाओ यारो
ये धरती प्यासी है इसे खून पिलाओ यारो

लेख shala

आगाज उनका है

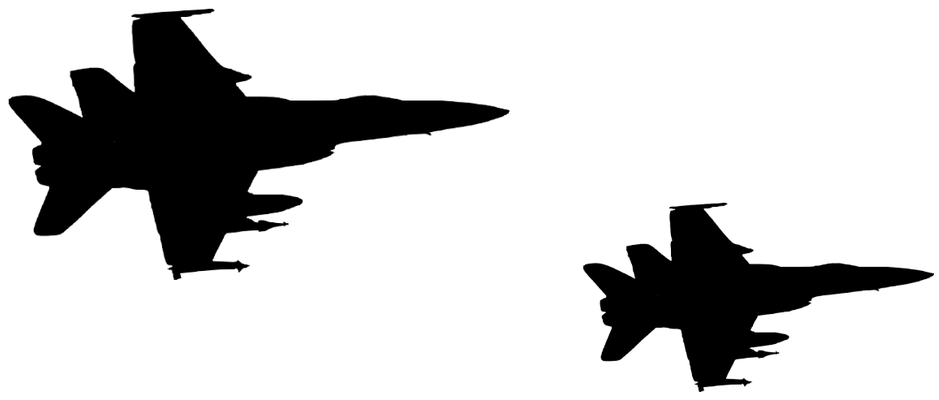

अंत भी उनका ही होगा

लेखshala
Expressing the Inexpressible

कल इंतकाम था
आज सुकून है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

अजीब दस्तूर हो चला दुनिया का ऐ दीप कानों से पीकर जहर लोग मुंह से उगलने लगे है

मुद्दतो बाद मिली थी ये दुआ की दुआ में मिली थी वो मुद्दतो के बाद

लेख shala
Expressing the Inexpressible

नसीब को कोसना भी क्या कोसना जनाब चूड़िया ही पहन लो गर बेबस हो हालात से

लेख shala

कैसे हारे सबकुछ
आलम ना पूछो
छाती पर थे जीत के तमगे
पर दिल हारा सा पाता था

कुछ इस कदर कबूल हुई बदनसीब की दुआ
की आया ख़ुदा पूछने तेरा क्या हुआ

लेख shala
Expressing the Inexpressible

किसी दर्मिया फिर किसी रोज मिलेंगे
अभी लम्बा है सफ़र वक़्त कोई खोज मिलेंगे

लेखshala
Expressing the Inexpressible

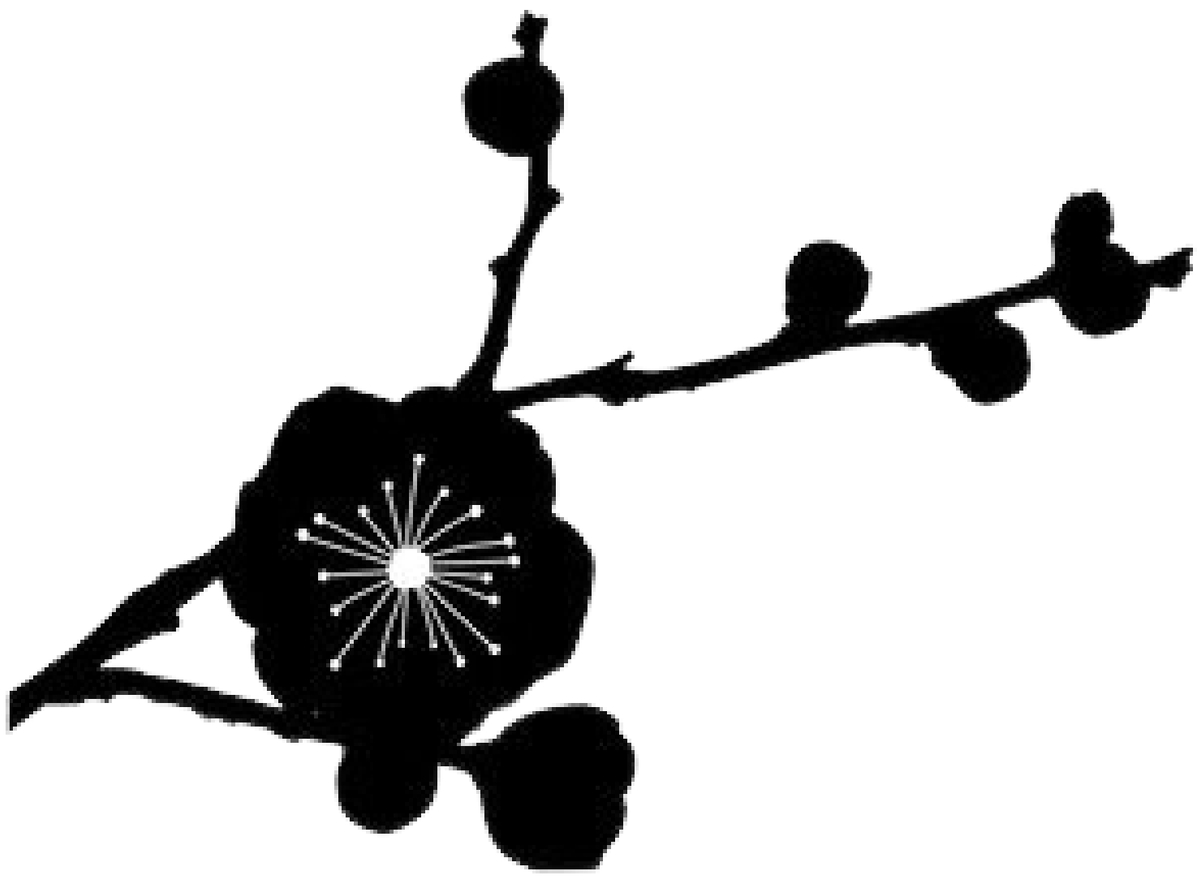

अरसे के इंजार से वाकिफ है हम इंजार में जिन्दगी बसार मिलेंगे

लेख
shala

ऐ जिन्दगी तेरे हिसाब का हिसाब नहीं
जो हिसाब से तेरा हुआ उसी से बेहिसाबी हुई

आज नफ़रत है तुम्हे जिस आवाज से लाला
जब ख़ामोशी बात करेगी तो जवाब नहीं देगी

ये तजुर्बे ही है दोस्त जो हौसले तोड़ते है
वरना पैदा तो सारे योधा ही हुआ करते है

लेखshala
Expressing the Inexpressible

मैं देखता हूँ बचपन को मुड़कर
की ये बचपन मुड़कर देखता क्यूँ नहीं

लेख
shala

कुछ तो बाकि हो निंशा अधूरी मोहब्बत का
जुदाई ही तो है क़यामत तो नही आई है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

कंहा ढूँढू सुकून कही खो गया है
अरे नशे में था वो, शायद सो गया है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बर्दास्त की हद
तुम क्या जानो दीप
देखो जरा वक़्त को
दो पल की ख़ुशी बर्दास्त नही

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

आज नामुराद वो
फिर आँखों के दर्मिया है
देख जिसे अनदेखा करने
की ख्वाहिश सी होती है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

हर बात नागवार आखिर हो गयी आज
ऐ वक़्त तू अकेला ही बदलता क्यों नहीं

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

भरोसा रख दीप वक्त फिर बदलेगा
करेंगे चर्चा जख्मों की विस्तार से करेंगे

लेख shala
Expressing the Inexpressible

ले आओ दवा कह देना बीमार है
इलाज इश्क का है और मर्ज ला इलाज है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

अपने दिले हाल पर मायूस ना हो दीप
बोया जहर है काटेगा जहर ही

लेख
shala

कहा से लाते है लोग ये बदल जाने का फन
सूरत तो बदलती नहीं ख्याल बदलते जाते है

इतिहासो के पन्नो में
कही होगा नाम हमारा भी
बदनामी लूट रहे है इतनी
की नामी हो जायंगे

लेखshala
Expressing the Inexpressible

खफ़ा है कलम अब अश्क़ नहीं लिखेगी
लिखेगी ये क़यामत अब इश्क़ नहीं लिखेगे

लेख
shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

भरोसा तो था तुझ पर
मगर खता ये रही की अँधा था

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

पूछ लो हाल अब सुकून है
चढ़ा था ख़ुमार अब उतर गया

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

ऐ पर्वतो देते हो रास्ता
या तुम से भी टकराऊ मैं
भय हार प्यार की राहों को
कही पीछे छोड़ मैं आया हूँ

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

औकात की क्या बात करते हो लाला
पैसा दबदबे और शौहरत पर नाज करते हो लाला
वक्त से शायद मुखातिब नहीं हो तुम
तभी किरायेदार होकर मालिकों सी बात करते हो लाला

लेखshala
Expressing the Inexpressible

हारती बाज़ी पर भी दाव लगा देता हूँ मैं
उस से हारा जग में बंदा और भला क्या हारेगा

लेख
shala

उसकी रहमतों की चादर कुछ ऐसे ओढ़ ली
की जीते तो भी तेरे है और हारे तो भी तेरे है

लेखshala
Expressing the Inexpressible

चट्टान से दिल को
कुछ ऐसे तोड़ रहे है हम
की हीरा हुआ तो चल जायेगा
कोयला हुआ तो जल जायेगा

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बेफिक्र है हम
अपनी ही दुनिया में ऐसे
की पवन कोई नभ में जैसे
बादल को बहकती है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

की मेहनत पर कुछ हाथ नहीं
अपनी तो वही कहानी है
तुम अटल सिरे से नामी हो
हम ना काबिल आडवानी है

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

आरजू तो हमे भी इत्मिनान की है साहब मगर वो बंदूक दिखा कर खैरियत ऐ हाल पूछते है

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

मत रोको इन चले जाने वाले को
उनकी मंजिले ही शायद दूसरी है

लेख shala

रहम की गुजारिश थी उस परवर्दिगार से
मिलती रही मुश्किलें रहमते ऐ परवर्दिगार से

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बड़े फक्र से पाला था हमने अहम को
जो टकराया किसी अहम से मिट्टी ही हो गया

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

भूल जाता है वो यार बदलता है
ये पैसा सगा नहीं घर-बार बदलता है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

नागवार है जो हर गवार था
दर्द के भी साकी पैमाने बना दिए
हमने दी दुहाई महकदा दूर है
अजीज वो मेरा इतना की बोतल ही ले आया

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

कैसे उजड़ी सल्तनते
आलम ना पूछो
एक अदद बेपरवाही थी
दिल में जलती आग थी

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

उम्मीदों ने कुछ यू तोडा है मुझे
तोडती है उम्मीद जैसे किसी ना उम्मीद को

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

मेरी नाराजगी तुझसे नहीं ऐ खुदा
में तो नाराज हूँ बस शौक शौक में

लेख shala

बैठे अक्सर तन्हाई में
कुछ ये ख्याल भी होता है
क्या होगा उसे ख्याल मेरा
फिर ये सवाल भी होता है

लेख shala
Expressing the Inexpressible

ये चमचागिरी का रोग अजब
नादान मनुज क्या पाता है
औरो की फेकी खाता है
और अपनी मैं को गवाता है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

सवालो के ये तीर अभागे
छु भी ना पाए अक्स उसका
ख़ामोशी की ढाल को पहने
क्या खूब वो रण में लड़ता था

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

हम थे नासमझ वो ज्ञान बन गए
धर्म के रहनुमा कुछ बेईमान बन गए
गीता और कुरान रही कोने में पड़ी
जो काफ़िर थे वो भगवान बन गए

लेख shala

वो इस कदर ताकत दिखाने में लगे है
जो बनाया सदियों में मिटाने में लगे है

लेखshala
Expressing the Inexpressible

शामे ठहरी ठहरी सी
कुछ ऐसे ढलती है
अल्पमत में ज्यो गठबंधन
की सरकारे चलती है

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

गर नहीं मिलता इश्क
हर किसी को ज़माने में
तो हर कफ़न को यंहा
तिरंगा भी कहा मिलता है

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

हर एक नज़ारा चुरा गया
वो दूर देश से आया था
तुम इन राहों से कह देना
कोई एक मुसाफिर आया था

लेख
shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

गिर ही गया वो नजरों में मेरी कुछ इस कदर पूर्ण बहुमत की जैसे सरकारे गिरती है

लेख
shala

पूछा गेंद ने पत्थर से
वो बचपन कंहा खो गया
बोला पत्थर मुस्काकर
अब बचपन बड़ा हो गया

Expressing the Inexpressible

मिल गया वो आज फिर
महफ़िल ऐ गुलजार में
फासला दो गज का था
दुरी सदियों की हो चली

लेखshala
Expressing the Inexpressible

मिट रही थी आरजू और
मिट रहे थे ख्वाब सब
तेरा आना क्या हुआ
सब हसरते फिर जल उठी

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

माना सुकून हजार है
दुनिया मे ऐ बंदे
मगर हाईवे पर हल्का होने
की बात ही कुछ और है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

इक दीद - इक उम्मीद - इक एहसास
करके खड़े हां अस्सी राहिया ने
पहला ही तुर जाना सी पर जाण वालिये
इक तेरी आस करके खड़े हां

लेख shala

लेखshala
Expressing the Inexpressible

छुटने लगी है सासे पर
तेरा मोह नहीं छूटता
दिल में लगी है आग
और धुआ भी नहीं उठता

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

बना देती है समझदार
सबक हजार सिख ला जाती है
ख़ाली जेबे अक्सर
जिन्दगी सारी खा जाती है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

मुस्कुरा कर जाने दे
लाला इन जाने वालो को
कुछ चले जाने वाले
कभी लौटते नहीं है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

वंहा दुःख का कोई निंशा नहीं
जंहा हर इक चेहरा हस्ता है
दूर यंहा से पार कंही
इक और जंहा भी बस्ता है

लेखshala
Expressing the Inexpressible

इस वीरान जिन्दगी में
रौनके हज़ार लाया था वो
सुनसान किसी साहिल पर जैसे
कश्ती बनकर आया था वो

लेख
shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

जब काफ़िर बन जाते है जोगी
और जोग मौज बन जाता है
मत पूछो कैसा लगता है
जब शौक रोग बन जाता है

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

वो तो वक़्त ने
हनुमान भक्त बना दिया
वरना चेले तो हम भी
मुरली वाले के ही थे

लेख shala

लेख shala
Expressing the Inexpressible

क्या कहने तेरे अन्न दाता
क्या किस्मत तूने पाई है
भूख मिटा कर औरो की
खुद क्यों फ़ासी खाई है

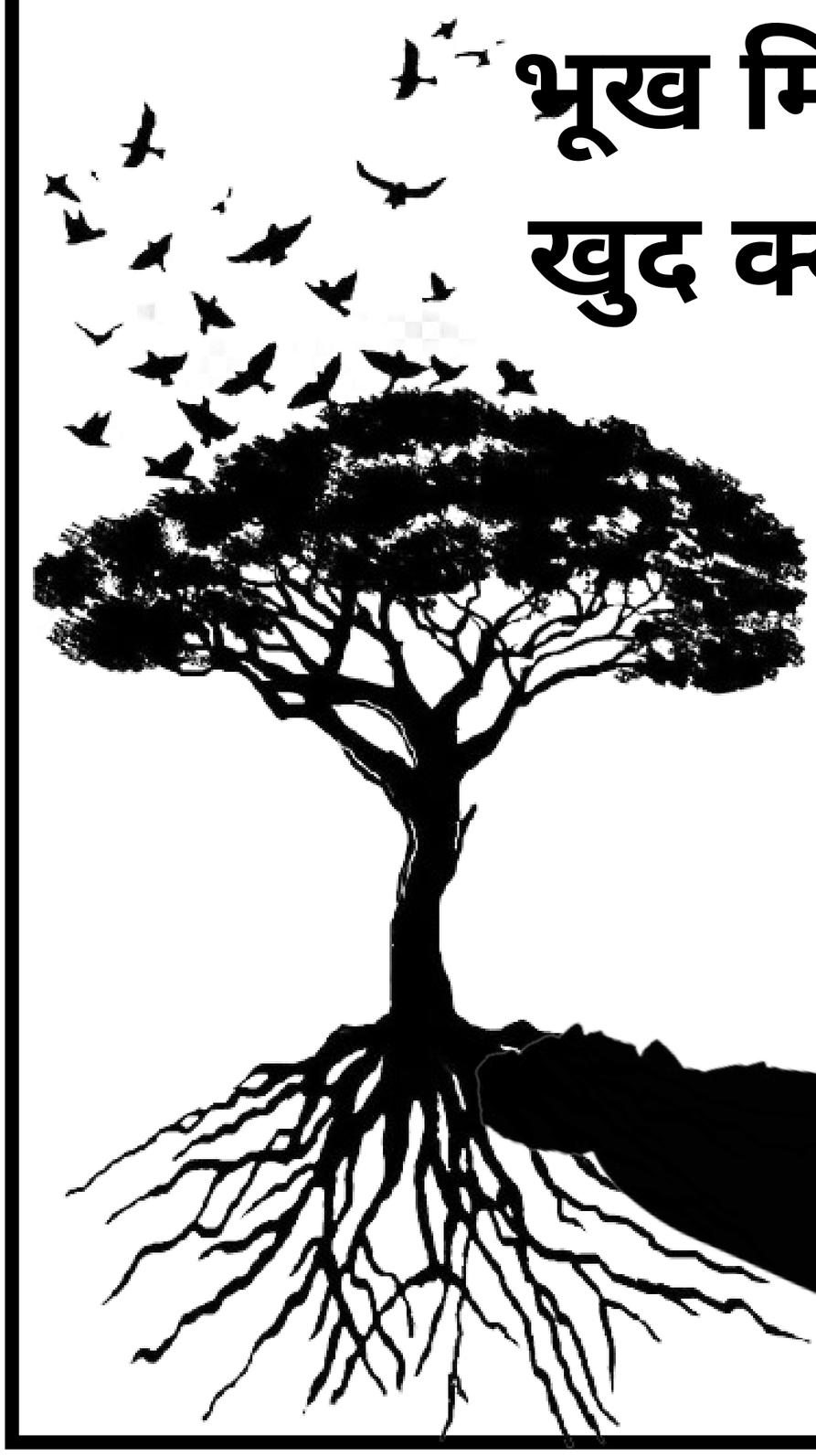

लेख shala

लेख shala

Expressing the Inexpressible